

मेरी मैं जगदम्बे दीड़ी मैं अम्बे ॥२॥

दोड़ सिंगासन सिंग पे आओ मैं ॥२॥

क्या जमाना आ गया

सत्य, धर्म, भक्ति को मानव बिना बिचारे खा गया ॥२॥

मेरी मैं जगदम्बे दीड़ी मैं अम्बे ॥२॥

① आज नहीं कीमत है ज्ञान की और नहीं भगवान की

क्या होगा आखिर दुनियां में मति डोली इंसान की ॥२॥

कोई नहीं है सुनने वाला मैं ॥२॥ ठग का बादल दौ गया

सत्य, धर्म, भक्ति को - - - - - दोड़ सिंगासन - - - - -

मेरी मैं जगदम्बे - - - - - दीड़ी - - - - -

② आज सनातन पंगु हुआ है, कोई नहीं रखवाला है

सदग्रथों और सदपुरुषों की जुवा में पड़ गया ताला है मैं ॥२॥

ऐसी घड़ी में आन उल्टो मैं ॥२॥ इनको क्या क्या भा गया मैं

सत्य, धर्म, भक्ति को - - - - - दोड़ सिंगासन - - - - -

मेरी जगदम्बे - - - - - दीड़ी - - - - -

③ जान हथेली पर लेकर के घूम रहे हैं व्यवचारी

जहर पिलाकर घरती मैं को रोज पनपते व्यापारी यों ॥२॥

ज्ञान की कीमत आप समझती मैं ॥२॥ हत्यारों का क्या गया मैं ॥२॥

सत्य, धर्म, भक्ति को - - - - - दोड़ सिंगासन - - - - -

मेरी मैं जगदम्बे - - - - - दीड़ी मैं अम्बे

४) भूकम्पो और तूफानों ने अपने दिल में ठानी है
 दूर लगेगा अब लाशों का, "श्री बाबा श्री" ने जानी है ^{॥२॥}
 खूब करी मनमानी, जग ने ^{॥२॥} खप्पर में जग समा गया ^{॥२॥}
 सत्य धर्म, भक्ति को ----- दोड़ सिंगसन -----
 मेरी ^{॥२॥} जगदम्बे ----- दोड़ ^{॥२॥} अम्बे -----